Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

मन्नेरवारलू लोकगीत: जनजातीय जीवन और लोकसंस्कृति का दर्पण

डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
क्रिस्तु जयंती (मानित विश्वविद्यालय), बेंगलूरू

लोकभाषा के माध्यम से स्वर और लय के संगीतात्मक आवरण में लिपटी हुई सामान्य जन-समुदाय के हार्दिक राग-रंगपूर्ण भावानुभूतियों को लोकगीत कहा जाता है। लोकगीत का 'लोक' में, लोकसमाज में और लोकसाहित्य में अद्वितीय स्थान है। इसलिए आदिवासियों के लोकगीत, आदिवासी लोक समाज में बहुत प्रचलित हैं। लोकगीत की परंपरा आदिवासियों की लोककथा, लोकगाथा और लोकनाट्यों में देखने को मिलती है। किसी महाशय ने सच ही कहा है कि "सामान्यत: 'लोक' शब्द का अनुवाद अंग्रेजी के फोक शब्द से हुआ। ऋग्वेद में 'लोक' शब्द एक विराट समाज की ओर संकेत करता है।"1 आदिवासियों में लोकगीत, लोककथा और लोकनृत्य जीवन के एक अंग माने जाते हैं। आदिवासी लोकगीत लोगों में प्रचलित होते हैं। प्रचलन के दो अर्थ माने जाते हैं। प्रथम किसी समय विशेष मात्र में प्रचलित गीत। कभी-कभी ऐसा होता है कि आदिवासी लोकगीत लोक में बहुत प्रचलित हो जाता है। दूसरे अर्थों में आदिवासी लोकगीत एक परंपरा द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी से लोक प्रचलित बन जाता है। एक अर्थ में कबीर, सूर और तुलसी की भजन परंपरा इतने दिनों बाद भी प्रभावी बन पड़ती है, परन्तु ये गीत-परम्पराएँ लोकगीत में नहीं आती।

आदिवासी लोकगीत एक ऐसी कृति है जो कई भाषाओं की भाव-व्यंजना, विषय प्रतिपादन, बिम्ब-योजना और शिल्प-सौन्दर्य में अद्भुत समानता रखती है। आदिवासियों के गीतों, लोकगीतों तथा लोककथाओं के माध्यम से भारतीय चित्त की एकता का और एकता से अधिक समानधर्मिता का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। हजारों वर्षों बाद भी आदिवासी जल,जंगल और जमीन में सामूहिक और सामुदायिक रूप में रहकर अपनी संस्कृति और सभ्यता के बीच जीवन यापन कर रहे हैं। आदिवासी समुदाय को एक विशेष संस्कृति में जीने वाला, प्रकृति में रहने वाला, एक-सी बोली-बोलनेवाला, अपने जीवन से जुड़े एक सांस्कृतिक देवी-देवता को मानने वाले समूह के रूप में परिभाषित करके देखा जा सकता है। आदिवासी लोकगीतों में लोक जीवन के सारे तत्त्व मौजूद होते हैं। इस समुदाय की लोक-आस्था और लोक श्रद्धा प्रचलित हो जाती है। लोकगीतों में सामान्यत: लक्षण स्वत: ही उभरकर हमारे सामने आते हैं, जिनकों लोक प्रचलित मान लेते हैं। गीतों में लोकगीत और आदिवासियों के लोकगीत सामाजिक प्रक्रिया का आधार स्तम्भ होते हैं। तब आदिवासियों के लोकगीत लोकजीवन का सशक्त माध्यम माने जाते हैं। आदिवासी लोक-गाथाओं की सार्थकता मूलत: गाने बजाने में अन्तर्निहित है। इनमें से कुछ लोकगीत नृत्य या वाद्य सहित गाए जाते हैं और जो नृत्य-वाद्य के साथ नहीं गाए जाते हैं, उनके भी अपने-अपने राग निर्धारित होते हैं। इन लोक गाथाओं के विशेषज्ञ ही उन्हें गाते हैं। परन्तु ऐसे गायकों के भी विरासती तौर पर बाप-दादाओं और दादी-परदादियों से सीखी हुई गाथाएँ अविकल याद रहती है। इसलिए ये कथा-लोकगीतों के भीतर अपने मन से प्राय: नए प्रसंग आदिवासी लोकगीतों में जुड़ते चले जाते हैं। इसी कारण किसी भी लोक-गाथा का एक ही रूप सर्वत्र नहीं मिलता।

आदिवासी लोकगीत मौखिक परंपरा में प्रवहमान रहते हैं तथा लोकगीतों के रचियता प्राय: अज्ञात होते हैं। आदिवासी के लोकगीत प्रकृति में संगीतमयी तथा लय की प्रधानता धारण किये हुए होते हैं, जिनमें इनकी अपनी संस्कृति छुपी हुई होती है, साथ ही महिला प्रधानता इस लोक-साहित्य की प्रमुख विशेषता होती है। आदिवासियों के लोकसाहित्य को देखने से पता चलता है की यह एक मौखिक परम्परा-अभिव्यक्ति का माध्यम है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक मानव तक इनका साहित्य मौखिक परम्परा में अविरल रहा है और आज भी इसकी प्रामाणिकता का विशिष्ट चिन्ह मौखिकता ही है। प्राचीन काल में आदिमानव के पास प्रकाशन की अथवा प्रसारण की आधुनिक सुविधाएँ अनुपलब्ध थीं। वह अपने सहज एवं नैसर्गिक विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप से ही करता था जो कालान्तर में एक पीढ़ी तक मौखिक परम्परा में ही सम्प्रेषित होती रही। अत: यह नि:संकोच रूप से स्वीकार करना चाहिए कि लिपिबद्ध एवं प्रकाशित पन्नों से अधिक लोक साहित्य की प्रबल संवाहक अनुकरणात्मक एवं मौखिक तत्व ही रहे हैं। इसका तात्पर्य यह भी नहीं कि लोक साहित्य की सशक्त रचनाओं को लिपिबद्ध करने से इसका महत्व घट जाता है, बल्कि लिपिबद्ध होने से इनके अस्थिर रूप को स्थायित्व प्राप्त होता है और संदिग्धता की भ्रामक परम्परा भी समाप्त हो जाती है।

देवी देवता गीत (पोचम्मा गीत)

तमूडू की तानम अडग्या तनके के राताम अडग्या चेललु की चली बोनम अडीग्या

"तमूडू की तानम अडग्या तनके के राताम अडग्या चेललु की चली बोनम अडीग्या।
तमूडू की तानम अडग्या तनके के राताम अडग्या ॥
हेमू चुशी निलचिनावे हेमू चुशी निलचिनावे हि गटल्या नडमा।
आडेल्ली पोशा आडेल्ली पोशा ॥
हेमू चुशी निलचिनावे हेमू चुशी निलचिनावे आडेल्ली पोशा।
गप्पु उशी ताल्या चुशी गुंडाले चुशी ॥
वप्पू उशी ताल्या चुशी वागुले चूशी ।

नल्ला गोगांडे चुशी नवु मोकमे चुशी ।।
हेमू चुशी निलचिनावे हेमू चुशी निलचिनावे हि गटल्या नडमा ।
आडेल्ली पोशव्वा आडेल्ली पोशा ।।
गुट्टा चेठूले चुशी गुंडाले चुशी ।
हेमू चुशी निलचिनावे हेमू चुशी निलचिनावे हि गटल्या नडमा ।।"1

इस लोकगीत में इस समुदाय के लोगों ने अपने कुल देवता आड्डेल्ली पोचम्मा का उल्लेख किया है कि जब इस कुल देवता की पूजा की जाती है तब पहले उसके भाई पोतलिगन्ना को स्नान और बहन पोचम्मा को सली बोनम (थंडा नैवेद्य) दिखाए बिना इस देवी माँ की पूजा नहीं की जाती है। साथही लोग अपने कुल देवता से पश्न करते हैं की देवी माँ आप इसी जगह क्यों आयी हो। तब देवी माँ अपने भक्तों कों उत्तर में कहती है कि सुंदर जल, जंगल और जमीन और आपकी भक्ति श्रद्धा को देखने के बाद प्रसन्न होकर मैं यहाँ उपस्थित हुई हूँ। इसमें प्रश्नोत्तर शैली में भक्तों एवं भगवान के संवाद का वर्णन किया है। जैसे- गुप्पु उशी (घनदाट जंगल देखकर) गुट्टा चेठूले चुशी (पहाड, पेड देखकर) गुंडाले चुशी (इन जंगलों में बड़ी-बड़ी नदिया देखकर) नवु मोकम चुशी (आपकी प्रसन्न भक्ति देखकर) आदि।

विवाह संबधी गीत (आयीरेन्लू गीत)

मुडू शिटला गोजमालू तेचीनामे

"मुडू शिटला गोजमालू तेचीनामे ।
मेमू मुगुरू यारनलु वचीनामे ।।
मुडू शिटला गोजमालू तेचीनामे ।
मेमू मुगुरू यारनलु वचीनामे ।।
पटावया पटावया कुमराया ।
मा शेतु की आयरनल विया वय्या ।।
नालगु शिटला गोजमालू तेचीनामे ।
मेमू नलगुरू यारनलु वचीनामु ।।
पटावया पटावया कुमराया ।
मा शेतु की आयरनल विया वय्या ।।
आयदु शिटला गोजमालू तेचीनामे ।
मेमू आयदुगुरू यारनलु वचीनामु ।।
पटावया पटावया कुमराया ।
मा शेतु की आयरनल विया वय्या ।।
योडु शिटला गोजमालू तेचीनामे ।
मेमू योडुगुरू यारनलु वचीनामे ।।
पटावया पटावया कुमराया ।
मा शेतु की आयरनल विया वय्या ।।
दोतुलु लेवानी अलग्या कुंमरोडु।
दोसा तीगालु तेची दोतुले कुट्या ।।
अंगुलु लेवानी अलग्या कुंमरोडु ।
अंगुलु लेवानी अलग्या कुंमरोडु ।।
आरीट्याकुल तेची अंगुले कुट्या ।
सेलालु लेवानी अलग्या कुंमरोडु ।।
शेरला नासु तेची सेलालु कुट्या ।
मुखुपुल्ला लेवानी अलग्या कुंमरोडु ।।
बंडी ग्यारा तेची मुखपुल्ला पेट्या ।
पटावया पटावया कुमराया ।।
मा शेतु की आयरनल विया वय्या ।।"2

मन्नेरवारलू जनजाति समुदाय में विवाह के समय 'आयरनलु' नामक प्रथा के अनुसार कुम्हार के घर से कुछ मटकियाँ लाकर उनकी पूजा की जाती

है। यह आयरनलु की रस्म शादी के दिन सुबह में की जाती है। विवाह के बाद आयरनलु की मटकियोंको दूल्हे के घर पर भेज दिया जाता है ताकि उसमें कुछ धान रखे। उन्हे फेंका नहीं जाता है, बल्कि संभालकर घर में रखा जाता है। इस लोकगीत में जब कुम्हार के घर से आयरनलु की मटकियाँ लाने के लिए स्त्रियाँ जाती हैं। तब कुम्हार को पैसा, कपड़े, धान आदि दिया जाता है। जब कुम्हार इन सब चीजों से संतुष्ठ नहीं रहता है, उस समय इस गीत के माध्यम से कुम्हार और इन स्त्रियों में बातचीत होती है कि कुम्हार किन-किन चीजों को चाह रहा है और स्त्रियाँ कौन-कौनसे प्रकार के सामान कुम्हार को देने के लायीं हैं। वे कुम्हार से कहती हैं कि आप क्यों रूठ रहें हो हम तीन स्त्रियाँ आयी हैं तीन पायली (सेर) गेहूँ लाए हैं, हमें आयरन्लु की मटकियाँ जल्द-से-जल्दी दे दीजिए, विवाह का समय हो रहा है। कुम्हार फिर से रूठ जाता है, तब वे लोग कहती है पाँच स्त्रियाँ आयी हैं पाँच पायली धान लायी हैं। इसके साथ-साथ आपके लिए नए कपड़े लाए हैं। सोने के कर्णफूल लाए हैं। जल्दी-जल्दी हमें आयरन्लु दे दीजिए विवाह का समय हो रहा है। तब कुम्हार उत्तर देता है की इतना जल्दी क्या है अब मेरे पास आयरन्लु नहीं है, अभी मैं बनाता हूँ। इतना भी मत रूठो हमें जल्दी से जल्दी आयरन्लु दे दो। तब वे आयरन्लु लेकर विवाह मंडप पहुँचती हैं। मन्नेरवारलू समाज कृषी आधारित समाज है और किस प्रकार इसकी सारी परम्पराएँ अन्य समाजों से जाकर जुड़कर एक विस्तृत समाज बनाती हैं, इस गीत के माध्यम से हमें ज्ञात होता है।

पर्व-त्यौहार गीत (होली त्यौहार के समय गाने वाली गीत)

ओमन्ना गायलु गोबीयलो

"ओमन्ना गायलु गोबीयलो
इपोद्दे पुन्नम, रेपे पुन्नम
माकु वियारादा
माकु वियारादा
पुन्नम आईना तेलारी
पुट्टलु तोनी वच्चीनाये
जोन्नाला बन्डलु
ईपोद्दे पुन्नम, रेपे पुन्नम
माकु वियारादा माकु वियारादा।" 4

इस गीत में कहा गया है कि मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय में होली के त्यौहार को बहुत अच्छी तरह से मनाते है। इस त्यौहार के समय लड़के दांडिया खेलते है और लड़कियाँ गीत गाते हुए घर-घर जाकर ज्वार माँगते हुए कहते है आज और कल पूर्णिमा है तो हमें ज्वारी आज धान करों क्योंकि आपकों होलीका देवी के आर्शीवाद से इस पूर्णिमा के बाद बहुत ज्वारी आयेगा है। उसमें से थोड़ा हमें भी दान करों। अगले साल भी आपकों बहुत ज्वार होगा। इस प्रकार होली के त्यौहार में यह गीत गाया जाता है।

खान-पान से संबन्धित गीत - बामनोला, कोमटोला। रोया तिनाम, शापा तिनाम।

"बामनोला, कोमटोला। रोया तिनाम, शापा तिनाम॥
वकायालू, वन्टीशापलू। घटी गाने आन्डूकुन्डाम,गाटा वट्टी येसकुनटम॥
बामनोला, कोमटोला। रोया तिनाम, शापा तिनाम।
कोडी कूरा, तोटा कुरा, ओका ताटे ने आन्डुकुटाम। गाटा वट्टी येसकुण्टाम॥
बामनोला कोमटोला। रोया तिनाम शापा तिनाम।
मटानु मसाला ओकाताटा ने वन्डूकुन्टाम। गाटा वट्टी ने येसकुन्टाम॥
बामनोला कोमटोला। रोया तिनाम शापा तिनाम॥"5

इस लोकगीत में मन्नेरवारलू समुदाय के लोगों की खान पान संबधित वर्णन जिससे पता चलता है कि मन्नेरवारलू समुदाय के लोग क्या-क्या खाते हैं। गीत के अनुसार इनके प्रिय भोजन में रोया (छोटी मछली), शापा (मछली), कोडी (मुर्गी), कोटा कुरा (हरी सब्जी), मँका (बकरी), आदि प्रकार के माँस, सब्जियाँ और हरी सब्जीयाँ होती हैं। इस गीत में आगे कहा गया है कि क्या अपना समुदाय के लोग ब्राह्मण या कोमटी (बनिया) है क्या ? वे लोग मांस नहीं खाते हैं तो क्या हमें भी नहीं खाना चाहिए ? अपने समुदाय में सब विविध प्रकार के मांस खाते हैं। इसके साथ-साथ यह भी उल्लेख है कि अपने समुदाय में त्यौहार हो या किसी की मृत्यु हो जाए तब भी हर एक व्यक्ति मांस का सेवन करता है और तोटाकुरा (अपने जंगल से प्राप्त हुई अलग-अलग प्रकार की हरी सब्जी और फल) खाते हैं।

बाल गीत - लाली गोपाला बाला

"लाली गोपाला बाला।
लाली सुगनाला बाला॥
लाली कारूण्या शिला।
लाली शिरी लोला॥

निनू गन्ना तनरी वच्चू।
निकू सक्करी पालू तेच्चू॥
नी आत्मा संतोषी हून्चू।
आटमू सागींचू... लाली गोपाला ॥
निनू गन्ना तल्ली वच्चू।
निकू सक्करी पालू विच्चू॥
नी आत्मा संतोषी हून्चू।
आटमू सागांचू... लाली गोपाला॥
सारा पनूलू ऊन्नाई ईन्टला।
सवरींन्चू कूनवो बनली॥
निदरा शे निदरा बाला।
निदरा पोवला लाली गोपाला बाला॥" 6

मन्नेरवारलू समुदाय में जब बच्चा जन्म लेता है, तब छोटे-छोटे अलग-अलग कार्यक्रम मनाये जाते हैं। उस समय होनेवाले कार्यक्रमों में यह गीत गाया जाता है और जब यह गीत गाया जाता है तब वहाँ सिर्फ महिलाएँ होती हैं। इस लोकगीत में कहा गया है की छोटे से, नन्हें से, प्यारे से, बालक तुम मत रोओ आपके माता और पिता दोनों दूध और चीनी लेकर आ रहे हैं वह पी लेना और शांति से सो जाना। आप कितने गुणवान हो कितने अच्छे हो इस तरह रोना आपके लिए अच्छा नहीं होता। घर में भी आपके लिए आपके माता और पिता ने खाने के लिए एवं खेलने के लिए बहुत कुछ रखा है। जिनसे आपका पेट भी भरेगा और आपका मनोरंजन भी होगा। इसीलिए आप चुप-चाप सो जाओ।

जनजाति संस्कृति होने के कारण मन्नेरवारलू समाज के लोकगीत उसकी अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक हैं। मन्नेरवारलू लोकगीत जनजातीय जीवन की आत्मा और उनकी सांस्कृतिक चेतना का जीवंत दस्तावेज हैं। ये गीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं। देवी-देवताओं की आराधना से लेकर विवाह, त्यौहार, खानपान और बाल-संस्कार तक की परंपराएँ इन गीतों में संकलित हैं। मौखिक परंपरा में रचे-बसे ये लोकगीत पीढ़ी दर पीढ़ी अनौपचारिक रूप से स्थानांतरित होते रहे हैं और आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। आदिवासी लोकसाहित्य में प्रकृति, समुदाय, नारी और श्रद्धा की अद्भुत संगति मिलती है। इन गीतों के माध्यम से मन्नेरवारलू समाज की संस्कृति, भाषा और लोकविश्वास संरक्षित रहते हैं। यह लोक परंपरा भारतीय सांस्कृतिक विविधता में एक विशेष और समृद्ध आयाम जोड़ती है। अतः मन्नेरवारलू लोकगीत जनजातीय समाज का सांस्कृतिक दर्पण हैं जो उनके जीवन, संघर्ष और सौंदर्यबोध को प्रकट करते हैं।

मन्नेरवारलू लोकगीत जनजातीय जीवन की जीवंत अनुभूतियों के स्वर हैं, जो उनके सामाजिक और सांस्कृतिक अस्तित्व को प्रकट करते हैं। ये गीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि जीवन के विविध पक्षों का दार्शनिक और भावात्मक चित्रण हैं। न गीतों में देवी-देवताओं की भक्ति, विवाह की परंपराएँ, पर्व-त्योहारों का उल्लास और खान-पान की विविधता सम्मिलित है। लोकगीतों की मौखिक परंपरा ने इन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखा है। इनकी भाषा, शैली और रचना में आदिवासी समाज की आत्मा झलकती है। गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य, जीवन संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव का सुंदर संगम मिलता है। मन्नेरवारलू समाज की सांस्कृतिक विविधता और जीवंत परंपरा को यह साहित्य जीवित रखता है। नवीन पीढ़ी के लिए यह गीत सांस्कृतिक विरासत के रूप में संजोए जाने योग्य हैं। इनके माध्यम से जनजातीय समाज की अस्मिता, आत्मनिर्भरता और प्रकृति से जुड़ाव उजागर होता है। हर लोकगीत में एक गहरी सामाजिक चेतना और सामूहिक भावनाओं का प्रवाह है। यह लोक परंपरा भारतीय संस्कृति के व्यापक ताने-बाने में विशेष स्थान रखती है। निस्संदेह, मन्नेरवारलू लोकगीत जनजातीय जीवन के सांस्कृतिक दर्पण हैं, जो इतिहास और वर्तमान को जोड़ते हैं।

संदर्भ सहायक ग्रंथ सूची –

1. वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, एम.ए.एच. डी द्वारा संकलित किताब लोक साहित्य पृ. सं 94
2. राजमणी लिंबन्ना बिरमवाड 60, समुनबाई बिरमवाड 50, गंगामणी बाबू बिरमवाड 35, लक्ष्मीबाई सुरेश गटुवार 30 सावित्राबाई रामलु बिरमवाड 40,ललीताबाई सायुलु बिरमवाड 45 आदि, गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.
3. यमुनाबाई ठक्करवाड 40, गोविंदबाई पुपल्लवार 55, पोसानीबाई पुप्पलवार 52, लक्ष्मीबाई ठक्करवाड 45, और इनका ग्रुप गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.
4. सरस्वती नरसिमलू गटुवार 52, गोदावरी हनमनलु कोंडावार 48, पोसानी नरसिमलू कलमुरगे 38, चंद्राबाई सायन्ना मदीकुंटावार 60, गंगामणी मारोती कोंडावार 42, लक्ष्मीबाई शिवाजी कोडावार 45, शांताबाई लक्ष्मण कोंडावार 37, सरस्वतीबाई गंगाधर कोंडावार 64, जलामणी कोंडावार 63 राजमणी गंगाधर गटुवार 67 गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.
5. वहीं - गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.
6. यमुनाबाई ठक्कुरवाड 40, गोविंदबाई पुप्पलवार 55, राजमणी पुप्पलवार 36, धमक्का गंगन्ना न्यालमवार 58 और इनका ग्रुप गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.
7. सरस्वती नरसिमलू गटुवार 52, गोदावरी हनमनलु कोंडावार48, पोसानी नरसिमलू कलमुरगे 38, चंद्राबाई सायन्ना मदीकुटावार 60, गंगामणी मारोती कोंडावार 42, लक्ष्मीबाई शिवाजी कोडावार 45, शांताबाई लक्ष्मण कोंडावार 37, सरस्वतीबाई गंगाधर कोंडावार 64, जलामणी कोंडावार 63 राजमणी गंगाधर गटुवार 67 गांव - कोडंलवाडी, तालूका - बिलोली, जिला – नांदेड, महाराष्ट्र, वर्ष - 2015.